A PUBLICATION OF MOTHERHOOD UNIVERSITY, ROORKEE

(Recognized by the UGC with the right to award degrees u/s 22(1) of the UGC act 1956 andestablished under Uttarakhand Government Act No. 05 of 2015)

Motherhood International Journal of Multidisciplinary Research & Development

A Peer Reviewed Refereed International Research Journal

Volume III, Issue II, February 2019, pp. 35-38

ONLINE ISSN-2456-2831

भारतीय शिक्षा के ऐतिहासिक आधार

डॉ0 सरिता आर्या

शिक्षा विभाग

मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, हरिद्वार

सत्य , धर्म , शान्ति , प्रेम और अहिंसा भारत के नैतिक तथा आध्यात्मिक आदर्श है। सबसे पहले हम सत्य की बात करते है। तो दुनिया भर में भारत के अतिरिक्त सत्य की मूलधारणा को सम्पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने वाला कोई शब्द अन्य भाषा में नही है। सत्य का अर्थ का है। सच्चाई या यथार्थ । सत्य से ऊपर या परे कोई धर्म नही है। गांधी जी के अनुसार सत्य का अर्थ अपने प्रति सत्य होना भी है। यह गुणार्थ देता है – बौद्धिक अखण्डता और सत्यनिष्ठ का और अपनी अन्तरआत्मा की मान्यता के अनुसार कर्म करना । वर्तमान समय में सत्य कही पीछे पृष्ठभूमि में चला गया है। और सत्य का ही सर्वत्र बोलबाला है, फिर भी हमे सत्य के बारे में निराश होने की आवश्यकता नही है। बल्कि इसका साहस और धैर्य के साथ मुकाबला करना होगा।

भारतीय शिक्षा का दूसरा आदर्श धर्म है। यूरोपिय भाषा का कोई भी शब्द उन सब तत्वों कों अपने अन्दर नही समेट पाता है। जो धर्म की धारणा को पूर्णतः स्पष्ट कर सके। भारतीय दर्शन में धर्म का संकेत संयम , नीतिपरायणता , और सदाचरण से हैं। धार्मिक जीवन मानव को विश्व का एक मानवीय नागरिक बनने के मार्ग पर अग्रसर करता है। मनुश्य के प्रति कर्तव्य का दूसरा नाम धर्म है। धर्म और कर्तव्य में कोई भेद नही होता ।

आध्यात्मिक दृष्टि से दूसरो की सेवा करना धर्म होता है। और सामाजिक दृश्टि से कर्तव्य। जब विद्यार्थी धर्म के आदर्श को समझ जायेगें तब वे आज्ञाकारी बनेगें। हम जीवन में कानून नही तोड़ते । भारतीय विधि सहिंता में वर्णित दण्डो से बचने के लिए जो हम पर लागू किये गए है। हम चोरी नही करते , क्योंकि उसके कारण हमको सजा मिल सकती है। लेकिन उच्चता और नीतिपरायणता के नियमों और प्रतिमानों का कानून हमारे ऊपर लागू नही कर सकता , मगर सिर्फ धर्म ही अपने प्रभाव से हमें उन नियमों और प्रतिमानो का पालन करने को कह सकता है। धर्म ही है। जो व्यक्ति को अपने निजि व्यापार में भी पूॅजीवाद के उस असमान्य चेहरे से दूर रखता है। जिसे सारी दुनिया निन्दनीय मानती है। परन्तु पूॅजीवाद का एक मान्य रूप भी है। जो धर्म के अनुसार आचरण पर

बल देता है। जो आदमी धर्म का पालन करेगा वह कभी द्वेशी नही होगा, क्योंकि वह जानता है। कि मानव द्वेश आदमी को भ्रष्ट बनाता है। वह धनार्जन को एकमात्र अपना लक्ष्य नहीं बनायेगा क्योंकि इससे वह अपने मन विचार , और आचरण को गिरायेगा। राष्ट्र को एक बनाए रखने वाली शक्ति है धर्म और उसके आदर्ष । और यदि हम दुनिया भर के देशों का अवलोकन करें तो जहॉ– जहॉ एक धर्म के अनुयायियों की संख्या सर्वाधिक है। तथा दूसरे धर्म या दर्शन को मानने वाले लोग कम हैं। वहां– वहां सघंर्श की स्थिति न के बराबर है। जबकि जहा– जहॉ विभिन्न धर्मो या दर्शनो को मानने वाले लोग लगभग बराबर संख्या में हैं। वहीं वहीं सघंर्ष की स्थिति बनी हैं। इसीलिए किसी भी मनुष्य की सर्वोच्च इच्छा होती है– धर्म के उच्चतम आदर्शो को अपनें जीवन में उतारना।

शिक्षा की अवधारणा में अगला गुण षक्ति का है। शान्ति सिर्फ शारीरिक या मानसिक मात्र नही बल्कि दोनो का सम्मिलित समग्र रूप है। षान्ति जीवन और उसके आचरणों का एकीकरण करने में सहायक होती है। भारतीय दर्षन वसुधैव कुटुम्बकम का रहा है। और इसी उक्ति के माध्यम से हम जीवन में षान्ति हासिल कर सकतें है। किसी भी वस्तु को जब हम मेरा न कहकर हमारा मानेगें तभी वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा साकार हो सकती है। और हम आन्तिरिक शान्ति प्राप्त कर सकतें है।

भारतीय शिक्षा के आदर्शो में प्रेम अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रेम के विषय मे अनेक भारतीय ऋषियों ने अपने विचार व्यक्त किए है। और इसकी महत्ता का गुणगान किया है। प्रेम अनेक अर्थो की और सकेंत करता है। केवल उस और नहीं जिससे हम साधारण रूप से परिचित होते है। प्रेम के एक अर्थ के अनुसार गहरी अनुभूति के साथ दूसरे को समझना है। प्रेम दुनिया की महानतम् और प्रभावी शक्ति है। उसका स्थान न तो किसी शक्ति ने लिया है। और न ही ले सकेगी। प्रेम हमेशा गरीबी में मिलता है। और अमीरी में केवल बच्चो और बुजर्गो में मिलता है। इसका क्षेत्र व्यापक है। यह प्रेम ही है जो मानव जाति कों आपस में बॉधे रखता है। जिस दिन प्राचीन भारत का वसुधैव कुटुम्बकम का परिपालन होने लगेगा , तब प्रेम को विश्वव्यापी स्वीकृति और मान्यता प्राप्त होगी। और तब प्रेम मानवीय व्यवहार को सबके जीवन का अनुबन्धनीय आचरण बन जायेगा।

शिक्षा का अन्तिम आदर्श अहिंसा है। अहिंसा जैन , बौद्ध और प्राचीन भारतीय दर्शन का मूल अवधारणा रही है। इसका समनार्थक शब्द अग्रेंजी में नयी है। अहिंसा महज अहिंसा मात्र नहीं है। अहिंसा के वास्तविक अर्थ से अनेकोंनेक अर्थो को भी अपने अन्दर समाये हुए है। जब हम अहिंसा का पालन करते है। तब हम तमाम सृजित ब्रहाम्ण से अनायास जुड़ जाते है। तथा उसका एक अनिवार्य अंग बन जाते है।

अहिंसा एक अनुभूति है सबके साथ बंधने की , पशु – पक्षियों समेत प्राणियों के साथ अभिन्नता की । अहिंसा हमें उपदेश देती है। बन्धुत्व का सब जन्तुओं और प्राणियों समेंत । अहिंसा का पालन मन सें , वाणी से और कर्म से किया जाता है। किसी के प्रति मन में गलत विचार या भावना जागृत करना हिंसा की श्रेणी में आता है। वाणी द्वारा किसी को तकलीफ देना हिंसा है। और कार्यो द्वारा किसी की हत्या करना भी हिंसा है।

जिन पॉच आदर्शो का हमने उल्लेख किया है। वे मानव को ज्ञान प्राप्त कराने में सहायक सिद्ध होंगें। जिससे उनकी उर्जा राष्ट्र निर्माण में लग सकेगी। तरूणावस्था में किशोरो को जिस प्रकार की शिक्षा दी जायेगी । उसी पर उसके भविष्य का निर्माण होगा। वह क्या बनेगा उसकी युवावस्था में समाज व देश के प्रति कैसी भूमिका होगी। आज के तरूणों को दी जाने वाली गुणवत्तापूरक शिक्षा ही तय करेगी तरूणो के जीवन की गुणवत्ता।

एच.जी. वैल्स ने एक बार कहा था – "मानव का इतिहास दिनों –दिन शिक्षा और महाविपत्ति के बीच की एक दास्तान है।" यह एक आशाजनक विचार है। इसका यह अर्थ है। कि यदि हमने शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया तो मानव जाति को महाविपत्ति का सामना करना पड़ सकता है। कोई भी राष्ट्र तब तक स्वतन्त्र और विकसित नहीं हो सकता है। जब तक उसके नागरिक बुनियादी रूप से शिक्षित न हो। बुनियादी शिक्षा से हमारा अर्थ उपरोक्त शिक्षा के आधारों का मनुष्य के जीवन में अनुकरण से है। लेकिन वर्तमान समय में जिस गति से आगे बढ़ने की होड़ में पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण कर रहे है। उससे अच्छा परिणाम हमें नहीं मिल रहा है। हमारा समाज एक परम्परागत है। और हमारे समाज की शिक्षा में सत्य , धर्म , शान्ति , प्रेम और अहिंसा जैसे नैतिक मूल्यों की आवश्यकता है। यदि हमारे नीतिनिर्धारकों समेत शैक्षिक प्रक्रिया में लगे सभी घटक शिक्षक , विद्यार्थी , पाठ्यक्रम , कालेज , अभिभावक , समाज, समाजसेवी, नेता , विधायिका , कार्यपालिका , न्यायपालिकाओं का सम्मिलित प्रयास शिक्षा को अच्छा बनाने का ही हो तो निश्चित रूप से अच्छे परिणाम सामने आयेगें।

सारांश

प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा पद्धति के सत्य ,अहिंसा, धर्म ,शान्ति, प्रेम मूलभूत आधार थे। जिसके कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व में ये सारी चीजे आ जाती थी। अर्थात् व्यक्ति के व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती थी। लेकिन धीरे – धीरे हम आधुनिकता की ओर बढ़ते चले गए। तथा अपनी शिक्षा पद्धति के ऐतिहासिक आधारो को मुख्य विषय हटाकर गौण विषय बना दिया। जिसके कारण धीरे–धीरे समाज का नैतिक पतन होता चला गया। और आज समाज में सभी कार्य औपचारिक तौर पर होने लगे। अनौपचारिक नियंत्रण कमजोर होने लगा। जिस तरह पष्चिम में उगने वाली वनस्पति भारत में नहीं उग सकती, कारण जलवायु की भिन्नता है। उसी प्रकार पश्चिमी शिक्षा पद्धति भी भारतीय समाज का भला नहीं कर सकती, क्योकिं भारतीय समाज की संस्थायें अलग तरह की है। अतः अन्त में केवल यही कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति तथा पश्चिमी शिक्षा पद्धति का समन्वय ही हमें अच्छे एवं सुखद परिणाम की और ले जा सकता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. वैश्य एवं गुप्ता, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास

2. आहूजा , राम 1995 : " भारतीय सामाजिक व्यवस्था , रावत " पब्लिकेशनस , जयपुर
3. शर्मा , के एल 2006 : " भारतीय सामाजिक सरचंना एवं परिवर्तन रावत " पब्लिकेशनस , जयपुर
4. अग्रवाल, जी0 के0 2012 : " समाजशास्त्र " एस0 बी0 पी0 डी0 पब्लिकेशनस आगरा